भगवान

यशस् और श्री

स्वामी ईश्वरानन्द द्वारा

‘दर्शन और मनन’ की सिद्धयोग गोष्ठी

शनिवार, २१ नवम्बर, २०२०

नमस्ते।

सिद्धयोग अभ्यास ‘दर्शन और मनन’ की इस सिद्धयोग गोष्ठी में आपका स्वागत है। मेरा नाम स्वामी ईश्वरानन्द है। मुझे हमेशा ही आनन्द होता है जब मैं यह बताकर आपको अपना परिचय देता हूँ कि मैं स्वामी ईश्वरानन्द हूँ। मैं एक सिद्धयोग स्वामी हूँ और सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक हूँ।

सिद्धयोग वैश्विक हॉल में आपके स्वागत में, यह गोष्ठी आरम्भ होने से पहले, सुन्दर छवियों और कलात्मक अभिव्यक्तियों का एक वीडिओ चल रहा था। इस वीडिओ के बारे में जो बात मुझे अच्छी लगी वह यह है कि यह वीडिओ उन तस्वीरों और कलाकृतियों को मिलाकर बनाया गया है जो सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् में आपमें से अनेक लोगों ने भेजी थीं। आपने ये तस्वीरें खीचीं, इन कलात्मक अभिव्यक्तियों की रचना की जब आप वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश का अध्ययन व अभ्यास कर रहे थे, ‘आत्मा की प्रशान्ति’।

Thanksgiving [‘थैन्क्स्गिविंग’] अर्थात् कृतज्ञता व्यक्त करने के इस माह में, हमारे पास कितना कुछ है जिसके लिए हम कृतज्ञ हो सकते हैं। इस माह में अनेक पर्व हैं और अनेक सिद्धयोग वर्षगाँठें हैं जिनका हम स्मरणोत्सव मनाएँगे।

उदाहरण के लिए, नवम्बर माह में महायात्रा के शुभारम्भ की २५वीं वर्षगाँठ है—महायात्रा, सन् १९९५ और १९९६ में हुई, श्रीगुरुमाई की टीचिंग्स् विज़िट थी। इस यात्रा के दौरान गुरुमाई जी ने सिखावनियाँ प्रदान कीं, और उन्होंने इस तीर्थयात्रा को ‘महायात्रा’ नाम इसलिए दिया क्योंकि यह सात माह लम्बी थी। इस महायात्रा में शामिल थीं, अमरीका व मैक्सिको के विभिन्न क्षेत्रों की यात्राएँ, और साथ ही यूरोप के देशों की यात्राएँ। गुरुमाई जी ने महायात्रा को “लाखों हृदयों की यात्रा” कहा है क्योंकि इसमें बहुत सारे हृदयों को उनकी कृपा का स्पर्श प्राप्त हुआ था और उनका परम दिव्य सान्निध्य पाकर, उनकी सिखावनियों व प्रेम से अनेकानेक हृदय जाग्रत हुए थे।

२५ नवम्बर को भारत के लोग देवोत्थान एकादशी यानी उस दिन का पर्व मनाएँगे जब, कहा जाता है कि भगवान विष्णु अपनी चार माह [जो कि वर्षा ऋतु का समय है] के विश्राम के बाद जागते हैं। वर्ष के इस समय के दौरान आकाश में से काले-घने बादल छटकर आकाश साफ़ दिखने लगता है और दिन सूर्यप्रकाश से ओतप्रोत होने लगते हैं।

इस पर्व के सम्मान में, और वर्ष २०२० के लिए गुरुमाई जी के सन्देश के आपके अध्ययन व अभ्यास के एक भाग के रूप में, मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा लिखित अभंग "सगुणाची शेज" को सुनें और इसके बारे में पढ़ें। यह अभंग सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर "Explore and Study Gurumayi's Message" [श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश का अन्वेषण व अध्ययन] इन पृष्ठों के अन्तर्गत पोस्ट किया गया है। इस अभंग में भगवान श्रीकृष्ण का स्तुतिगान किया गया है जो भगवान विष्णु के एक अवतार हैं।

और गुरुमाई जी के सन्देश पर अपने अध्ययन के दौरान, आपने जो सीखा व अनुभव किया है, इस बारे में अपने अनुभव, चिन्तन-मनन सिद्धयोग पथ की वेबसाइट को अवश्य भेजें।

भगवान विष्णु की आराधना करने के पश्चात् यानी २६ नवम्बर को अमरीका में इस वर्ष का Thanksgiving ['थैन्क्स्‌गिविंग'] अर्थात् कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन मनाया जएगा। इससे मुझे एक और वर्षगाँठ का स्मरण हो रहा है जिसका सम्मान हम सिद्धयोग पथ पर कर रहे हैं। २६ नवम्बर सिद्धयोग के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण दिन है क्योंकि ३१ वर्ष पूर्व—सन् १९८९ में—इसी दिन पर गुरुमाई जी ने सर्वप्रथम सार्वभौमिक सैटेलाइट सिद्धयोग शक्तिपात ध्यान-शिविर दिया था। इस शक्तिपात ध्यान-शिविर का प्रसारण गुरुदेव सिद्धपीठ से हुआ था।

***

यह 'दर्शन और मनन' की तीसरी सिद्धयोग गोष्ठी है।

सिद्धयोग पथ पर दर्शन के अभ्यास का अतीव आदर किया जाता है। गुरुमाई जी ने समझाया है कि दर्शन हमारे अपने हृदय में होता है। इस पूज्य अभ्यास के पीछे का रहस्य क्या है?

मैंने गुरुमाई जी को यह सिखावनी प्रदान करते हुए सुना है कि दर्शन श्रीगुरु के भौतिक स्वरूप को देखने तक ही सीमित नहीं है। आप अन्तर में शक्ति-जागृति के दर्शन की अनुभूति कर सकते हैं। आप अध्यात्म का अध्ययन करते हुए शास्त्रीय ज्ञान के दर्शन की अनुभूति कर सकते हैं। आप ध्यान में तथा प्रकृति में परम सत्य के दर्शन की अनुभूति कर सकते हैं। और आप स्वयं अपने आध्यात्मिक अनुभवों द्वारा दर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

जब भी ऐसा क्षण आता है, जब आपकी अन्तर-सत्ता में आध्यात्मिक क्रान्ति होती है, जब एक गहन आन्तरिक किमियागरी घटित होती है—*तो वह दर्शन है।* कुछ लोगों के लिए यह क्षण, मेघगर्जना और बिजली की कड़क जैसा रोमांचित कर देने वाला हो सकता है। अन्य लोगों के लिए यह क्षण, तितली के मखमली-पारदर्शी पंखों की तरह मृदुल और सौम्य होता है।

इन गोष्ठियों में दर्शन और मनन के हमारे अभ्यास के केन्द्रण के लिए श्रीगुरुमाई ने जो शब्द प्रदान किया है, वह है, "भगवान।" भारत की आध्यात्मिक परम्परा में 'भगवान' एक आदरयुक्त सम्बोधन है जो ईश्वर के लिए प्रयुक्त होता है। भगवान साक्षात् ईश्वर है। भगवान इस ब्रह्माण्ड की सर्वसामर्थ्यशालिनी, सर्वज्ञा शक्ति है। भगवान वे हैं जो सभी के हृदय में वास करते हैं।

विश्वभर की भाषाओं में ऐसा होता है कि किसी एक शब्द के अनेक अर्थ, अनेक अर्थ-भेद और सूक्ष्मताएँ हो सकती हैं। संस्कृत भाषा में 'भगवान' ऐसा ही एक शब्द है—अर्थ की दृष्टि से यह बहुआयामी है। अतः, ईश्वर का एक नाम होने के अतिरिक्त, 'भगवान' उन सन्त या महात्मा को सम्बोधित करने के लिए प्रयुक्त होता है जो छः विभूतियों या दिव्य गुणों को धारण किए हुए हैं।

प्राचीन भारतीय शास्त्र, विष्णुपुराण के एक श्लोक में इन गुणों को परिभाषित किया गया है और समझाया गया है कि शब्द 'भगवान', जिज्ञासुओं के हृदय को इतना प्रिय क्यों है। मैं आपको इस श्लोक का भाषान्तर बताता हूँ।

> समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य—साथ मिलकर ये छः विभूतियाँ या सद्गुण 'भगवान' के मूल शब्दरूप की रचना करते हैं।[१]

शुभ दीपावली के अवसर पर हुई 'दर्शन और मनन' की दूसरी गोष्ठी में हेदर विलियम्स् ने 'भगवान' शब्द के दो गुणों के विषय में समझाया था—समग्र ऐश्वर्य और धर्म।

आज मैं 'भगवान' के दो और गुणों के विषय में समझाऊँगा; ये गुण हैं—'यशस्' और 'श्री'।

'यशस्'

संस्कृत शब्द 'यशस्' के अर्थों का विस्तार बहुत सुन्दर है। इसके मुख्य अर्थ हैं, 'वैभव', 'भव्यता' 'प्रभा', और 'ख्याति'। 'यशस्' का अर्थ यह भी है, 'स्तुतियोग्य या समादरणीय' क्योंकि यह उन प्रचुर सद्गुणों या विशेषताओं को दर्शाता है जो एक महात्मा में होते हैं।

भगवान नित्यानन्द जैसी महान आत्माओं में इन गुणों का सम्पूर्ण वैभव जगमगाता है। जब हम ऐसी महान आत्माओं को पूजते हैं, तो हमें भी आशीर्वाद मिलते हैं जिनसे हमारे अन्दर यह उत्कट

अभिलाषा जगती है कि हम अपने अन्दर इन दिव्य सद्‌गुणों को खोजें, और इन सद्‌गुणों का विकास करने के लिए हम सशक्त महसूस करते हैं।

'यशस्' की प्राप्ति होती है, उन निरन्तर सत्कर्मों से जिन्हें हम आजीवन करते हैं। ये वे कर्म हैं जो दूसरों का उत्थान करते हैं, सामंजस्य लाते हैं, और संसार में सकारात्मक परिवर्तन व महानतर समझ स्थापित करते हैं।

भारत के एक गौरवशाली महाकाव्य, महाभारत में इस सिद्धान्त का सार अत्यन्त सटीक रूप में समझाया गया है। इसमें यह वर्णन किया गया है कि 'यशस्' श्रेष्ठता या उत्कृष्टता का वह तेजोमय संचय है जो दूसरों के मन में विस्मय उत्पन्न करता है।

'श्री'

अब मैं आपको संस्कृत शब्द 'श्री' के विषय में समझाऊँगा जो कि 'भगवान' का एक अन्य दिव्य गुण है।

'श्री' को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है, 'प्रचुरता', 'सौन्दर्य' 'मांगल्य', और 'सद्‌भाग्य'। 'श्री' देवी महालक्ष्मी का एक सुन्दर नाम भी है। देवी महालक्ष्मी वह दिव्य शक्ति हैं जो हमारे अन्दर व हमारे आस-पास सौन्दर्य, प्रचुरता व मांगल्य को प्रकट करती हैं।

'श्री' यह शब्द संस्कृत के उस धातुरूप से जुड़ा है जिसका अर्थ है, 'आलोक या प्रभा को प्रसरित करना'—दूसरे शब्दों में दिव्यता के प्रकाश को प्रसरित करना। अत:, देवी-देवताओं, तीर्थक्षेत्रों, पावन ग्रन्थों और आध्यात्मिक गुरुओं के नाम के आगे, अकसर आदरसूचक शब्द के रूप में 'श्री' प्रयुक्त होता है। उदाहरण के लिए, हम कहते हैं, श्रीगुरु, श्रीकृष्ण, श्री मुक्तानन्द आश्रम, श्रीगुरुगीता। 'श्री', इनमें निहित मांगल्य को व्यक्त करता है और यह सूचित करता है कि इनमें से प्रत्येक दिव्यात्मा में व प्रत्येक तत्त्व में वह सामर्थ्य है कि वे प्रकाश प्रदान कर सकते हैं—वह प्रकाश जो हमें हमारी अपनी अन्तरस्थ प्रभा के साथ जोड़ देता है।

भारत में आदर या शिष्टाचार के शब्द के रूप में 'श्री' का प्रयोग किया जाता है। विशिष्ट पद-प्रतिष्ठा या ख्याति के लोगों के लिए इसका प्रयोग किया सकता है—उदाहरणार्थ, वे लोग जिन्होंने महान लोकोपकारी कार्य किए हैं, जो प्रतिष्ठित कुल के हों, या वे जो बड़े-बुज़ुर्ग अथवा ज्येष्ठ हों।

इसके अतिरिक्त, 'श्री' का प्रयोग, पुरुषों के लिए 'श्रीमान' व महिलाओं के लिए 'श्रीमती' में भी होता है जिनका शाब्दिक अर्थ है—वे जो 'श्री' से युक्त हैं।

भारत में, सामाजिक शिष्टाचार, जैसे 'धन्यवाद कहना' या 'क्षमा माँगना'—ये भाषा के अन्तर्गत होते हैं। अतः लोगों को यह आवश्यक नहीं होता कि वे बार-बार इन शब्दों को कहकर अपनी कृतज्ञता या खेद व्यक्त करें। इसी प्रकार, दूसरों के प्रति आदर व्यक्त करना भारत की भाषाओं व रीति-रिवाजों का भाग है। श्री, श्रीमान, श्रीमती—इन शब्दों का प्रयोग इसी बात को दर्शाता है।

***

दर्शन का अभ्यास है, *देखना* व *देखा जाना* । यह अभ्यास है, अपने परम प्रिय इष्टदेवता को देखना और उस देवता द्वारा देखा जाना। यह अभ्यास है, भगवान नित्यानन्द को देखना और भगवान नित्यानन्द द्वारा देखा जाना।

चिन्तन-मनन का अभ्यास, दर्शन के आपके अनुभवों को और महान आत्मा के सान्निध्य में रहने से प्राप्त ज्ञान को ठोस बनाता है। गुरुमाई जी ने हमेशा ही इस बात पर बल दिया है कि यह महत्त्वपूर्ण है कि जो भी भाव, संकल्पना या धारणा हमारी चेतना से होकर गुज़रती है या इसमें उठती है, उस पर हम पूरी तरह से और गहराई से विचार करें।

इस विषय में सोचें। ऐसे कितने ही अपूर्ण विचार हैं जो हमारे मन में अनसुलझे ही रह जाते हैं। इन विचारों को वैसा ही अनसुलझा छोड़ देना स्वयं के प्रति अनादर ही है। चाहे वे विचार आपको पसन्द हों या नापसन्द हों, चाहे वे विचार सुखकारी हों या दुःखकारी हों, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक, उनके उभरने के पीछे अवश्य ही कोई कारण है। यह अनिवार्य है कि आप उन कारणों की जाँच करें, और आपके मन का कोई भी कोना ऐसे विचारों से अवरुद्ध न हो जिन पर पर्याप्त विचार-विमर्श न किया गया हो, जिन्हें सुलझाया न गया हो।

मनन के अभ्यास द्वारा आप अपने आपको वह साधन या उपाय प्रदान करते हैं जिसकी सहायता से आप वहाँ जा सकें— उस स्थान में जा सकें जहाँ आप जाना नहीं चाहते थे, अपने अन्दर के उस स्थान को जान सकें जो वास्तव में *अद्भुत* है। गुरुमाई जी ने सिखाया है कि एक बार जब आप अपने मन के कोनों में जमे अनावश्यक, बोझ-से लगने वाले और अत्यधिक प्रबल प्रतीत होने वाले कचरे को स्वच्छ कर, स्वयं को शुद्ध कर देते हैं—एक बार जब आप अपनी अन्तर-सत्ता को साधुता व निर्मलता में वापस ले आते हैं—तब एकाएक आपको महान ज्ञान प्राप्त होता है। आप स्वयं अपने आनन्द को खोज लेते हैं। आप अपनी ही प्रफुल्लता को उजागर कर लेते हैं। आप स्वयं अपने सद्गुणों को पहचान लेते हैं। आप पाते हैं कि आप ख़ुश हैं और आप अपने ही रमणीय स्थल का निर्माण करते हैं जहाँ आप 'आत्मा की प्रशान्ति' की अनुभूति करते हैं।

भगवान नित्यानन्द के देदीप्यमान और चैतन्यमय स्वरूप के दर्शन करें और उनके इस स्वरूप पर मनन करें। ‘भगवान’ के गुण, ‘यशस्’ और ‘श्री’ को अपनी जागरूकता में बनाए रखें।

दर्शन और मनन की इस अवधि के दौरान, सिद्धयोग वैश्विक हॉल में पियानो के शास्त्रीय संगीत के सुमधुर स्वर गुंजायमान होंगे। निपुण शास्त्रीय संगीतकार और एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के स्टाफ़ सदस्य, कार्लोस डेल क्योटो इस संगीत का वादन करेंगे।

ध्वनि की तरंगों द्वारा स्वयं को अपने हृदय के गहरे स्थानों में उतरने दें। जब एक पक्षी नीले आकाश में ऊँची उड़ान भरता है तो जिस प्रकार हवा उसके पंखों को उठाए रखने में सम्बल देती है, उसी प्रकार संगीत की ध्वनि से अपने आपको साहस व उत्साह से भर जाने दें ताकि आप चिदाकाश में, परम चिति के स्वच्छ नील आकाश में विचरण कर सकें।

***

प्रतिभागियों ने ‘यशस्’ और ‘श्री’ को अपनी जागरूकता में बनाए रखते हुए दर्शन व मनन का अभ्यास किया।

तत्पश्चात्, स्वामी ईश्वरानन्द ने समापन के शब्द कहे।

सिद्धयोग वैश्विक हॉल में, इस गोष्ठी में आपने दर्शन और मनन का अभ्यास करने के लिए समय निर्धारित किया, इसके लिए मैं आपकी सराहना करता हूँ।

स्वयं अपने अन्दर ‘यशस्’ और ‘श्री’ के गुणों को खोजकर और उनका विकास कर, आप अपनी ही सकारात्मक ऊर्जा व प्रभा से अपना दैनिक जीवन आलोकित करते हैं। आप इन गुणों की संगति में रहते हैं : जब आप अकेले होते हैं, जब आप दूसरों के साथ होते हैं, जब आप अपना काम कर रहे होते हैं और जब आप अपना दिन व्यतीत कर रहे होते हैं।

ये गुण आपके हैं—ये आपके साथ हैं, आपको सम्बल दे रहे हैं, चाहे आप जीवन में उतार-चढ़ावों का अनुभव कर रहे हों। एक पक्षी के बारे में सोचें। चाहे वह ऊँचा उड़ रहा हो या नीचे उतर रहा हो, वह जानता है कि हवा मौजूद है। हवा वह शक्ति है जो निरन्तर उसके साथ बनी रहती है, उसे सम्बल प्रदान करती है।

मैंने सुना है कि २०२० के इस वर्ष में महामारी के कारण स्वास्थ्य विशेषज्ञों की ऐसी सलाह है कि सभी अपने-अपने घरों में ही Thanksgiving [‘थैन्क्स्गिविंग’] का पर्व मनाएँ। उनका यह सुझाव है

कि लोग विभिन्न तकनीकी साधनों द्वारा अपने परिजनों व मित्रों से जुड़ें, और इस प्रकार 'थैन्क्स्‌गिविंग' के भाव का उत्सव मनाएँ।

सिद्धयोग पथ पर, आप जानते हैं कि उत्सव तब भी होता है जब आप अकेले, अपने साथ होते हैं क्योंकि उस समय भी आपका हृदय प्रचुर कृपा की अनुभूति कर सकता है। इसलिए, आपको यह बोध है कि आनन्द व प्रेम को दूसरों के साथ बाँटना इस बात पर निर्भर नहीं है कि उन्हें व्यक्तिगत रूप में देखना ही चाहिए।

आपको मेरी सलाह है कि आप रचनात्मक तरीक़े खोजें जिनसे आप भगवान के प्रति, श्रीगुरु के प्रति, धरती माँ के प्रति और उन लोगों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकें जिन्हें आप प्रेम करते हैं और जिनकी आपको परवाह है। जिन्हें मदद की ज़रूरत है, उनकी मदद करने के लिए भी अनेक तरीक़े हैं। इसलिए, मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप यह सीखें कि इस चुनौतीपूर्ण समय में आप किस प्रकार क़दम उठाएँगे ताकि आप अपने समाज की सेवा कर सकें, उसके काम आ सकें और जो इतने भाग्यशाली नहीं हैं उनकी मदद कर सकें।

'थैन्क्स्‌गिविंग' के सप्ताह का उत्सव मनाते हुए, स्मरण रखें : 'यशस्' और 'श्री' आपके अन्दर तेजस्विता से जगमगा रहे हैं।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

विष्णुपुराण, ६.५.७४; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन २०२०।